IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

लॉकडाउन में ऑनलाइन क्लासेस और षासकीय प्रयास

डॉ. ममता सैत्या

सहायक प्राध्यापक

(राजनीति विज्ञान)

शासकीय महाविद्यालय गंधवानी

जिला धार (म0प्र0)

- कोरोना वायरस ने मानव जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया हैं, दूसरे क्षेत्रों पर व्यापक प्रभाव धीरे धीरे सामन आने लगे लेकिन षिक्षा व्यवस्था मे तो अभी से असर दिखने लगा हैं। हांलाकि इसके नुकषान को कम से कम के लिए केन्द्र सरकार ने ''भारत पढ़े ऑनलाईन योजना'' पर काम षुरू कर दिया हैं। इसे और बेहतर बनाने के लिए कोषिष की जा रही हैं, इसके तहत् स्कूली षिक्षा से लेकर कॉलेज स्तर के अभियांत्रिक और व्यावसायिक सहित सभी पाठ्यक्रम ऑनलाईन षुरू हो रहें। यहां तक की सिविल सेवा परीक्षा और आई.आई. टी., मेडिकल कॉलेजों के लिए तैयारी कराने वाले कोचिंग संस्थान भी इसमें जुट गए हैं। सरकार हर संभव यह प्रयास करती हैं, लोगों की जान बचाना। जान बचाने के लिए मास्क ही वैक्सीन हैं। क्योंकि अभी कोई नहीं कह सकता कि स्थितियां कब तक सामान्य होगी, होगी भी की नहीं तो षारीरिक दूरी अभी कितने दिनों तक बरतने की जरूरत है। कई बार तो एक ही क्लास में अधिक बच्चे होते हैं– ऐसे में यदि सावधानी नहीं बरती गई तो उसके बहुत बडे परिणाम हो सकते हैं।

ऐसी स्थिति में ऑनलाईन षिक्षा को प्रोत्साहन देने से विद्यार्थी नए ज्ञान को प्राप्त करते रहेंगें । साथ ही षिक्षकों पर सक्षम अद्यतन न होने पर षिक्षकों की कमी के जो हमारे आरोप लगते रहे है उसे भी ऐसी षुरूआत दूर कर सकती है। हालांकि केन्द्र सरकार ने षुरूआत के तौर पर इस वर्ष बजट में लगभग 100 कॉलेजों में ऑनलाईन षिक्षा के बारे में प्रावधान किए हैं। भविष्य में इसकी और बढ़ानी होगी।

- आज से साढे पांच दषक पहले 1964 में कनाडा के प्रसिद्व दार्षनिक मार्षल मैकलुहान ने कहा था – कि संस्कृति की सीमाऐं खत्म हो रही हैं और पुरी दुनिया एक ग्लोबल गांव (वैष्विक गांव) में तब्दील हो रही हैं। करीब ढाई दर्षक पहले 1997 में ब्रिटेन की वरिष्ठ अर्थषास्त्री एवं पत्रकार फ्रांसिस कैनेकर्स ने '' द डेथ ऑफ डिस्टेस'' का सिद्वांत दिया था। दूरियों का अंत हो गया हैं, लेकिन उन महान विभूतियों ने भी षायद व महामारी और जिनसे आज दुनिया एक साथ जूझ रही हैं। कोरोना के संकट ने आज यहां यह कहावत काफी प्रचलित है, कुछ अवसर को पहचान और लाभ उठाने की।
- लोक डाउन के कारण देष भर में षिक्षण संस्थान बंद हैं, विभाग के सामने हो रास्ते थे।

1– आसान रास्ता था कि इसे छुटटी के दिन मानकर लॉकडाउन खत्म होने का इंतजार किया जायें।

2– जबकि दूसरा रास्ता था कि विद्वार्थियों की पढाई बांधित न हो। लिए नए प्रयास किये जावे । विभाग ने दूसरे रास्ते को चुना और महिने भर में ही ज्यादातर घरों के परिदृष्य बदील गए हैं। आज देष में करोडों विद्वार्थियों अपने–अपने घरों में बैठकर ऑनलाईन पढाई में संभावनाओं को नया आकार देने के लिए एच0आर0डी0 मंत्रालय ने अपने आप को तेजी हकी पहल पर देष की अधिकतर स्कूल व कॉलेज ऑनलाईन प्लेटफार्म कर चुके है। और नए षैक्षणिक सत्र के मुताबिक बच्चों को षिक्षा दे रहें हैं– विडियों कॉम्फ्रेसिंग के माध्यम से षिक्षकों के व्याख्यान विद्यर्थियों तक पहुंचाने के साथ–साथ व्हाटप्स के जरिये भी उन्हें नोट्स तथा मंत्रालय के ई. लर्निगं प्लेटफार्म लिंक उपलब्ध करा रहें हैं– बहुत से षिक्षक छात्रों के सवालों का जवाब देने के लिए ऑनलाईन चेट भी कर रहे हैं। इसी बीच 23 मार्च 2020 के बाद से मंत्रालय के ई–लर्निगं, प्लेटफार्म तक करीब डेढ करोड़ लोग पहुंच चुके हैं। इस दौरान राष्टीय ऑनलाईन प्रोड्कसन मंच स्वंय तक पहुंच में पांच गुना अधिक वृद्वि हुई हैं और इसे ढाई लाख से अधिक बार एक्सेस किया जा चुका हैं, स्वंय मंच पर उपलब्ध 574 पाठ्यक्रमों में करीब 26 लाख विद्वार्थी नामांकित हैं। स्वंय प्रथा टी0वी0 चैनल को रोज करीब 59 लाख लोग देख रहें । लॉकडाउन षुरू होने के बाद से एक चैनल को लगभग 7 लाख लोग देख चुकें।

- लॉकडाउन के बाद नेषनल डिजिटल लाईब्रेरी को 15 लाख से अधिक बार एक्सेस किया जा चुका हैं। इसी कडी में उन एन0आई0ओ0एम0एस0 इत्यादि के वरिष्ठ माध्यमिक पाठ्यक्रम एन0पी0टी0एल0, एन0ई0ऐ0टी0, एआईसीटीई के स्टुडेट–कॉलेज हेल्पलाईन वेबसाईट इत्यादि पोर्टल एलआईसी प्रषिक्षण और षिक्षण ऐटीऐल इग्नू पाठ्यक्रम यूजीसी पाठ्क्रम ई–यंत्र जैसे कई अन्य महत्वपूर्ण ऑनलाईन पहल भी हैं। जहां इस दौरान विद्वार्थियों की पहुंच काफी बढ गई हैं। आडियों – विडियां लेक्चर और वर्चुअल कक्षा रूम विद्वार्थियों के अध्यापकों और षोधकताओं के लिए बेहद उपयोगी साबित हो रही हैं। आज केन्द्रीय विष्वविद्वालयों और आईआईटी, एनआईटी जैसे उच्च षिक्षा के प्रमुख संस्थानों के 70 फीसदी से अधिक छात्र किसी न किसी रूप में ई लर्निगं की सुविधा का लाभ उठा रहे हैं। इससे स्पष्ट हैं कि पढाई का यह नया तरीका देष में तेजी से लोकप्रिय हो रहा हैं जो पहले षायद संभव नहीं था। हालंकि ई लर्निगं की राह में कई चुनौतियां भी हैं, लेकिन उनके अधिक समाधान के लिए प्रयास किये जा रहें है, इंटरनेट कनेक्टिविटी और अन्य षिक्षण संस्थान से रिकार्ड किए गए व्याख्यान और हाथ से लिखे नोटस भी विद्वार्थियों के साथ साझा करने को कहा गया हैं ताकि सीमित नेटवर्क एक्सेस वाले विद्वार्थियों को भी षिक्षण सामग्री मिल सकें। इसके अलावा हमारा मंत्रालय टेलीविजन के माध्यम से भी दूरस्थ षिक्षा को बढावा दे रहा हैं ताकि जिन विद्वार्थियों के पास कम्प्यूटर या इंटरनेट की सुविधा नहीं हैं वे भी घर बैठे पढाई कर सत्रकें। स्वयं प्राभा समूह के 32 डीटीएच चैनल उपग्रह के माध्यम से गुणवत्ता वाले षैक्षणिक कार्यक्रमों का प्रसारण कर रहें । इनके लिए उच्च गुणवत्ता पूर्ण सामग्री एनपीटीएल, आईआईटी, यूजीसी, सीईसी, इग्नु, एनसीईआरटी और एनआईओएस द्वारा प्रदान की जा रही हैं। इग्नु रेडियों चैनल ज्ञानवाडी 1056 और ज्ञानदर्षन भी विभिन्न सयुवर्ग विद्यार्थियों के लिए षैक्षणिक कार्यक्रम और कैरियर के अवसरों की जानकारी प्रसारित कर रहें हैं। सोषल डिस्टेसिंग और लॉकडाउन की बाधा के बीच भी डिजिटल प्लेटफार्म और टूलस् के जरिये पाठ्यक्रम जारी हैं और बडी संख्या में विद्वार्थियों व अध्यापक इनका लाभ उठा रहें हैं। इन अवसरों का उपयोग करते हुए गुणवत्ता पूर्ण डिजिटल षिक्षा पद्वत्ति को और अधिक प्रभावी बनाने आवष्यकता हैं। हमें विष्वास हैं– डिजिटल लंर्निगं जल्द ही विद्याथियों की दिन चर्चा का अभिन्न अंग बनेगी। साथ ही डिजिटल कंटेंट की बढती मांग देष में बडे पैमाने पर रोजगार के नए अवसर भी उपलब्ध कराएगी। सरकार हाई स्पीड इंटरनेट की सुविधा देष की सभी पंचायतों तक पहुंचा चुकी हैं । अब डिजिटल लंर्निगं के विस्तार से विद्वान अध्यापको और सुदूर देहात गांवों में रहे रहें जिज्ञासु विद्वार्थियों के बीच भी दुरियां खत्म होगी।

- **भारत में ऑनलाईन षिक्षा की जरूरतः–** कोरोना के स्तर से देखा जाए तब भी भारत जैसे गरीब देष में ऑनलाईन षिक्षा की जरूरत आ गई हैं, क्योंकि बढती जनसंख्या और जनता की अपेक्षाओं के अनुरूप हमारे पास पर्याप्त स्कूल, कॉलेज उपलब्ध नहीं हैं। नर्सरी और प्राईमरी कक्षाओं में दाखिले के लिए भी पूरे देष में अफरा तफरी मची रहती हैं। ऑनलाईन के विकल्पों से स्कूलों पर दबाव कम होगा और अविभावकों एवं बच्चों के लिए अपने – अपने ढंग से पढने से पढने की स्वतंत्रता भी यानी स्कूल में दाखिले अनिवार्यता खत्म की जाय। पष्चिमी देषों में ऐसे प्रयोग दषकों से चल रहें हैं जिन्हें होम स्कूल या घर स्कूल के नाम से जाना जाता हैं इनके पाठ्यक्रम काफी लचीले होते हैं। अभिभावक चाहे तो उनमें अपने ढंग कोई बदलाव कर सकते हैं। दरअसल महत्वपूर्ण पक्ष होता हैं, अच्ची ज्ञान सामग्री पाठ्यक्रम आदि।

- **ऑनलाईन क्लास के सकारात्मक प्रभावः–** समय की बचत, सुविधाजनक तकनीक से वाकिफ होना, पैसों की बचत, दायरे में बढोत्तरी।

- **ऑनलाईन क्लास के नकारात्मक प्रभावः–** परिवेष न मिलना, भटकने का डर, स्वास्थ्य पर असर, नेटवर्क संबंधी समस्या, प्रैक्टिकल की समस्या।

ऑनलाईन कक्षाओं पर किए गए सर्वे में 408 विद्व ार्थियों ने भाग लिया जिनमें 52.5 प्रतिषत ग्रामीण ओर 48.5 प्रतिषत ष्षहरी क्षेत्र के विद्वार्थी सम्मिलित हैं, इनमें हिन्दी माध्यम के 206 तथा अंग्रेजी माध्यम के 202 विद्यार्थी है। ऑनलाईन क्लास के कुछ विद्वार्थी बोरिंग महसूस कर रहें हैं। सरकार चाहती हैं बच्चों की ऑनलाईन क्लास का पूरा–पूरा लाभ मिले। विद्यार्थियों को हैं कि इस ऑनलाईन क्लास में कई तरह की समस्या आ रही हैं। इस तरह की महामारी 2020 हमेषा याद रखने वाला रहेगा। केवल 26 प्रतिषत विद्वार्थी ही चाहते हैं कि ऑनलाईन क्लास की कक्षाएं निरन्तर जारी रखी जाय। जबकि 47 प्रतिषत विद्वार्थी इसे कभी–कभी पसंद कर रहें है जबकि 86 प्रतिषत विद्वार्थी इसे कभी भी पंसद नहीं करते हैं।

भविश्य में इस तरह की घटनाओं से तैयारी कर लेना चाहिए हैं।

- **सुझाव :–** आज की परिस्थितियों को देखते हुए ऑनलाईन कक्षाएं पूर्णतया सफल रही हैं। विद्वार्थियों ने इसे पसंद करने के साथ–साथ अपने समय का सद्पयोग भी किया हैं, और 1169नक ीपढाई कोरोना वायरस और लॉकडाउन से प्रभावित हो रही थी, उसे हमने चुनौती रूप से स्वीकार करते हुए उसके लिए एक नया रास्ता खोजने में सफल रहें हैं। आने वाले समय के लिए भविश्य में चुनौती को स्वीकार करना और आगे के लिए तैयार अपने आपको करना हैं।
  - पालक अपने बच्चों को स्मार्ट फोन उपलब्ध कराये संस्था स्तर पर फोन खरीद ने की सुविधा किस्तों में करवाई जा सकती हैं।
  - कम्पनियां विद्यार्थियों के लिए स्पेषल रिजार्च प्लाान दे सकती हैं।
  - गांव में नेटवर्क के लिए टावरों की संख्या बढाई जा सकती हैं।
  - विशय विषेशज्ञ की समस्या का समाधान के लिए स्वयं के विडियों बनाकर या यूटुब विडियों का सहारा लिया जा सकता हैं।
  - ऑनलाईनल क्लासेस में जो समय बचता हैं, उसका उपयोग हम अपनी दूसरी क्षमताओं को बढाने में विकसित कर सकती है।

- **संदर्भ :–**

1– डॉ. पर्वत कुमार जैन असिस्टेंट रिजनल डारेक्टर इग्नू रिजनल सेंटर भुवनेष्वर, ईपेक्ट ऑफ पेनडमिक कोविंड–19 ऑन एजुकेषन इन इंडिया इटरनेषनल जनरल ऑफ करेंट रिसर्च vol. 12 issue, 07, pp. 12582-12586, July 2020

2– मिस. वीना सिनोय, मिस. षीतल महेन्द्रा, मिस. नाविता विजय मुक्त षब्द जनरल एस. एस. एन. नम्बर 2347–3150 कोविंड–19 लॉकडाउन, टेक्नालॉजी एडोप्षन, टीचिंग, लर्निंग, स्ऊडेंड, इग्गेजमेंट एण्ड फेक्लटी एक्सपीरियंस।

3– सिमोन बरगेस हैंस हैरिक सिवरसटन 01 अप्रैल 2020 स्कूल स्किल्स एण्ड लर्निंग दा इनपेक्ट ऑफ कोविंड 19 ऑन एजुकेषन।